ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 3 से 9 सितम्बर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर विशेष आह्वान

शिक्षार्थियों को चरित्र सम्पदा से विभूषित करने का संकल्प लें शिक्षक बन्धु

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली लागू करके ही भारत पुनः विश्व गुरु बन सकता है

– स्वामी आर्यवेश

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति में ज्ञान का संचरण करता है तो वह शिक्षक कहलाता है। शिक्षक की यह परिभाषा भारत के राष्ट्रपति रहे उच्चकोटि के शिक्षक और दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने दी थी। उनकी दृष्टि में शिक्षण, सामाजिक और नैतिक दोनों ही दृष्टिकोण से उच्चतम कर्म है। आज के छात्रों का बौद्धिक एवं व्यवहारिक ज्ञान देखकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सहज अनुमान लगाया जा सकता है? ऐसा नहीं है कि शिक्षकों द्वारा छात्रों में ज्ञान का संचार नहीं किया जा रहा लेकिन यह ज्ञान एकांगी है। आज के शिक्षक मात्र प्राविधिक कौशल को आगे बढ़ाने में लगे हैं जो ज्ञान देने का पूर्ण उद्देश्य न होकर मात्र उसका एक भाग है।

अभी भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति घोषित की है इसे देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह जड़ को छोड़कर पत्ते सींचने जैसा है। क्योंकि इस शिक्षा नीति से शिक्षा का वास्तविक स्वरूप कहीं भी उभरकर नहीं आता। इसमें मात्र आसानी से डिग्री प्राप्त कराने का प्रावधान किया गया है। आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने शिक्षा नीति निर्धारण के समय एक सुव्यवस्थित प्रारूप बनाकर सरकार के पास भेजा था जिसमें गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रतिवेदन था लेकिन उसे इस शिक्षा नीति में जरा सा भी स्थान नहीं दिया गया। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

जब हम ज्ञान की बात करते हैं तो मन–मस्तिष्क में एक ऐसे ज्ञान की रूपरेखा उभरती है जो मनुष्य को रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, संकीर्णताओं और शेष पृष्ठ 3 पर

पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न श्री प्रणव मुखर्जी जी नहीं रहे

भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न श्री प्रणव मुखर्जी जी का 31 अगस्त, 2020 को निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। 50 वर्ष के राजनीतिक जीवन में उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण विभागों में मंत्री बनकर अपनी क्षमता का लोहा मनवाया। वे विलक्षण राजनीतिक प्रतिभा के धनी थे। 2019 में उन्हें सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया। श्री प्रणव मुखर्जी जी की खास विशेषता उनकी अद्भुत स्मरणशक्ति थी। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री और विपक्षी नेता के साथ–साथ राष्ट्रपति के रूप में जिस लगन और निष्ठा से कार्य किया वह अत्यन्त प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये। उन्होंने कहा कि भारत रत्न श्री प्रणव मुखर्जी के निधन से भारतीय राजनीति का एक सजग प्रहरी हम सबसे दूर चला गया। उन्होंने कहा कि उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि विभिन्न पार्टियों के सभी नेता दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश की सच्चे मन से सेवा करें।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आओ चुकाएँ ऋण माता-पिता का

- अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने प्रमुख ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं - जिस-जिस **कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाएँ, उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है, मृतकों के लिए नहीं।**

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वे अपने माता-पितादि की सेवा बड़े यत्न से करे।

ऋषिवर इसी समुल्लास में आगे बुजुर्गों की सेवा के बारे में लिखते हैं -

'..... उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

आपने देखा होगा कि भारतीयों/हिन्दुओं में तर्पण तथा श्राद्ध का प्रकार आजकल अलग प्रकार से प्रचलित हो गया है। मृत्योपरान्त मृतक की आत्मा की तृप्ति के नाम पर मृतक भोज, शैय्यादान या किसी पवित्र नदी में अस्थियाँ प्रवाहित करना कर्त्तव्य पूर्ति मान लिया जाता है। वर्ष में एक बार श्राद्ध पक्ष आता है। कहा जाता है कि इस काल में तथाकथित ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणादि से तृप्त करने से पितर तृप्त हो जाते हैं। यह पूर्णतया अवैज्ञानिक धारणा है, मिथ्या, कपोलकल्पित तथा धर्म के नाम पर मूर्ख बनाकर ठगने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वस्तुतः श्राद्ध और तर्पण जीवित बुजुर्गों का ही होता है। पितर का तात्पर्य ही जीवित माता पितादि से है। अगर जीवित रहते माँ-बाप को सुख न दिया तो मरे पश्चात् गंगादि में भस्मी प्रवाहित करना स्वयं को मूर्ख बनाना मात्र है। किसी ने इस हालात पर टिप्पणी की है -

'जियत पिता से दंगम दंगा, मरे पिता पहुँचाए गंगा।'

अगर आप जीवन में संतोष तथा उन्नति चाहते हैं तो माता-पितादि के भरपूर, हृदय से निकले आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है।

आज अनेकानेक कारणों से माता-पिता को अपना बुढ़ापा विपन्न स्थिति में, एकाकी काटना पड़ रहा है। इसीलिए Old Age Homes की संख्या बढ़ रही है। सारा जीवन, सारी इच्छाएँ, उमंगे बच्चों के भविष्य पर कुर्बान कर देने के पश्चात् जब वे अपने को दीन-हीन आश्रित अवस्था में पाते हैं तो अपने जीवन को अभिशप्त समझते हैं। वे एकाएक यह समझने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे इस संसार में क्यों हैं। उनकी सार्थकता क्या है। इससे दुखद स्थिति कोई नहीं हो सकती।

कुछ वर्ष पूर्व अमिताभ जी की एक फिल्म आयी थी बागवाँ अपनी सारी खुशी, सारा धन वे बच्चों को बनाने में खर्च कर देते हैं। अवकाश प्राप्ति के पश्चात् जब वे आत्ममुग्ध होते हैं कि अब बच्चे प्यार और सम्मान से उन्हें रखेंगे तथा जिन्दगी के सबसे सुन्दर पल अब वे चिन्तामुक्त होकर बितायेंगे तो बेटों के व्यवहार से उनके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। हमें फिल्म का सबसे मार्मिक दृश्य यह लगा कि जब पोते की शरारत से अमिताभ जी का चश्मा टूट जाता है, तब जिस प्रकार से चीजों को संभालकर रखने की सलाह और मंहगाई की मार की बात उन्हें कही जाती है उस समय कोई पिता क्यों न मृत्यु को जीवन से बेहतर समझेगा? काश पुत्र उस समय तनिक उन पलों को याद कर लेता जब पिता द्वारा लाया गया खिलौना टूट गया और उसके आँसू पोंछकर उसकी जिद पर रात के समय भी बड़ी मुश्किल से एक दुकान खोज, पिता नया खिलौना लाया। पुनः खिलौना टूटने पर पुनः लाया। पिता को पुत्र की आँखों में एक आँसू बर्दाश्त नहीं। व्यर्थ है उस पुत्र का जीवन जो माता-पिता की आँखों में एक अश्रु का भी कारण बने।

ऊपर हमने महर्षिवर के दो उदाहरण प्रस्तुत किए

हैं जिनमें से प्रथम में 'प्रसन्न किए जाएँ' और द्वितीय में 'उनका आत्मा तृप्त' को हमने गहरी स्याही में किया है। वह इसलिए कि कुछ लोग समझते हैं कि धन खर्च करने से उनकी कर्त्तव्य पूर्ति हो जाती है माता-पिता के वस्त्र, भोजन, औषधोपचार आदि पर खुले दिल से व्यय करने पर भी यह आंशिक ही कहा जायेगा। आत्मा के तृप्त होने के लिए कुछ और भी आवश्यक है।

इसे समझने हेतु यदि माँ-बाप अपने बच्चे को बड़ा करने के विभिन्न प्रसंगों की वीडियो बना लें तो अधिक आसानी से समझ सकेंगे। उन्हें दिखेगा वह दृश्य जब वो काम पर जा रहे हैं, पहले ही देर हो चुकी है पर बालक पिता के पास जाने को मचल गया। असंभव को संभव बनाते हुए वह कुछ मिनट बालक को देता है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह ऑफिस कार्य के नोट्स बना रहा है। बालक खेलता हुआ आता है, स्याही की दवात गिर जाती है सारे नोट्स खराब हो जाते हैं। बच्चे को डांट पड़ती है। बच्चा रोने लगता है। पिता सब कार्य छोड़ बच्चे को चुप कराने लगता है। गलती बच्चे की थी पर पिता Sorry कह रहा है। दुबारा से सारे नोट्स बना रहा है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह सहयोगियों के साथ गम्भीर चर्चा में निमग्न है। मना करने पर भी बालक बार-बार उस कमरे में आ जाता है। बार-बार का व्यवधान भी उसे उत्तेजित नहीं करता। उसे दिखेगा वह दृश्य जब छत पर वह पुत्र को बताता है कि वह मुंडेर पर जो पक्षी बैठा है उसे कौआ कहते हैं। बालक बार-बार पूछता है पिता खुश होकर बार-बार बताता है। झल्लाता नहीं।

बस ऐसा ही संयम, प्यार, उल्लास, सम्मान, आत्मीयता से भरा व्यवहार पितरों की आत्मा को तृप्त करता है। यही उनकी अपेक्षा है। वे वय बढ़ने के साथ कुछ-कुछ बालक सदृश होते चले जाते हैं, इस मनस्थिति को ध्यान में रखना होगा।

यहाँ प्रख्यात उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द्र लिखित किशोरावस्था में पठित एक कहानी 'बूढ़ी काकी' का स्मरण हो रहा है। इसकी प्रथम पंक्ति में मुंशी जी ने वृद्धावस्था का पूरा मनोविज्ञान समाहित कर दिया है।

'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।' घर में समारोह है। काकी को कमरे में बन्द रहने के सख्त निर्देश हैं। पल-पल काकी क्या सोचती है? अब कचौरी तल रही होंगी, कड़ाही में से कैसी छन-छन कर रही होंगी आदि वृद्धावस्था की अभिलाषा को व्यक्त करने में समर्थ है। कोई 'बूढ़ी काकी' कोठरी में बन्द न हो यह आदर्श स्थापित करना होगा। हर समारोह में, हर पल में, वे आपके संग हों। उपेक्षा वृद्धों को सह्य नहीं।

आप कभी दो घड़ी उनके पास बैठ सुख-दुख की बात करें अपनी उलझनें भी बताएँ, चाहे वे न भी समझें। तब देखें कि वे स्वयं को अभी भी मूल्यवान समझेंगे, ड्राइंग रूम में रखा शो-पीस नहीं। इस मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है।

काश! हर बालक नन्हें हामिद के संस्कार लेकर बड़ा हो। माता ने कष्टपूर्वक कुछ 'आने' (रुपये का भाग) उसे इसलिए दिए कि वह मेले में जाकर अपने लिए चिरअभिलाषित खिलौना ले आवे। पर हामिद लेकर आता है लोहे का चिमटा ताकि माँ की अंगुलियाँ रोटी बनाते समय जले नहीं। यही विशुद्ध भारतीयता है, जिसे हमें जीवित रखना है।

वेद में कहा है :-

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्।
एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त।
विपृच स्थवि मा पाप्मना पृङ्क्त। यजु. 19.11

जैसा माता-पिता पुत्र को पालते हैं, वैसे पुत्र को माता-पिताकी सेवा करनी चाहिए। सबको इस बात पर ध्यान देना चाहिए, कि हम माता-पिता की सेवा करके पितृऋण से मुक्त होवें। जैसे विद्वान् धार्मिक माता-पिता अपने सन्तानों को पापाचरण से हटाकर धर्माचरण में लगावें, वैसे सन्तान भी अपने माता-पिता के प्रति ऐसा वर्ताव करें॥

सम्पादक ''सत्यार्थ सौरभ''
मो.:-9314235101, 9001339836

पृष्ठ 1 का शेष

शिक्षार्थियों को चरित्र सम्पदा से विभूषित करने का संकल्प लें शिक्षक बन्धु

दुर्व्यसनों से ऊपर उठा दे। लोगों में प्रेम, सद्भाव, ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति, मातृ–पितृ भक्ति, सहयोग तथा समर्पण की भावना जगा दे, लेकिन आज की शिक्षा प्रणाली में ऐसा ज्ञान सम्भव नहीं है। छात्रों में चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का अभाव जिस रफ्तार से बढ़ रहा है वह समाज के लिए एक चिन्ता का विषय है। परिवार, समाज, राष्ट्र तथा उसके सदस्य वैसे ही होंगे जैसी वहाँ की शिक्षा प्रणाली होगी। जैसी शिक्षा वैसा समाज अथवा जैसे विद्यार्थी वैसे राजाधिकारी व कर्मचारी। इसीलिए आज का पढ़ा–लिखा अधिकांश व्यक्ति, कर्मचारी, अधिकारी अपने ज्ञान का प्रयोग समाज सेवा या देश सेवा में नहीं करता, अपितु वह केवल धन की लालसा से कामचोरी, हेराफेरी, रिश्वतखोरी अथवा अन्य अनियमितताओं को करने में अपनी बुद्धि को लगाना जीवन का लक्ष्य समझता है। क्योंकि उसे बचपन से युवावस्था तक मिली शिक्षा में विज्ञानवादी, सेवाभावी, मानवतावादी या राष्ट्रवादी होने के संस्कार नहीं मिले।

शतपथ ब्राह्मण का यह वचन, 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेदाः।' अर्थात् बालक के जीवनरूपी महल के निर्माण में माता–पिता तथा गुरु तीनों ही चतुर शिल्पकारों की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति के तीन आधार स्तम्भ माने गये। आचार्य, उपदेशक तथा नेता इन तीनों में आचार्य का स्थान सर्वप्रथम है। क्योंकि आचार्य से ही शिक्षा प्राप्त करके उपदेशक और नेताओं का निर्माण होता है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, पिता व आचार्य अपने उत्तरदायित्व को भलीभांति निभाते हैं तभी बच्चों में संस्कार तथा जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। रचनात्मक, व्यवहारिक, प्रभावी तथा जीवन निर्माण करने वाली यदि कोई शिक्षा है तो वह है गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली। गुरुकुलीय शिक्षा के प्रारम्भ में वेदारम्भ संस्कार के साथ गुरुकुल में प्रविष्ठ होने वाले ब्रह्मचारियों के लिए आचार्य घोषणा करता है कि इन ब्रह्मचारियों को आज से मैं गर्भ में धारण करता हूँ। इसका तात्पर्य है कि बालक का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा का उत्तरदायित्व माता के समान करने की घोषणा आचार्य करता है। जिस प्रकार गर्भ में स्थित अपने बच्चे का ध्यान हर प्रकार से माता रखती है उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों का हर प्रकार से ध्यान रखता है। बच्चों के चतुर्मुखी निर्माण के लिए गुरुकुल में प्रवेश दिलाया जाता था। यह एक ऐसी परम्परा थी जिसमें बच्चों का चतुर्दिक विकास होता था। अमीर–गरीब, राजा–निर्धन सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाते थे। समस्त विद्याओं को प्राप्त करने तथा जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए बच्चे की बुद्धि को प्रखर बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है और यह कार्य गुरुकुलीय शिक्षा में आचार्यों द्वारा किया जाता है। इतना ही नहीं महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा निर्धारित निर्देशों के अनुसार सभी ब्रह्मचारियों को तुल्य खान–पान, तुल्य आसन और तुल्य वस्त्र परिधान देने की परम्परा आज भी स्थापित है। आज एक गलत धारणा लोगों में व्याप्त है कि गुरुकुल में केवल संस्कृत का ही ज्ञान कराया जाता है, ऐसा नहीं है। संस्कृत मुख्य रूप से तथा अन्य विषयों की शिक्षा देने की भी समुचित व्यवस्था गुरुकुलों में है।

यदि समाज को संस्कारित करना है, राष्ट्र का निर्माण करना है तो विशेष रूप से शिक्षा को अपनी भारतीय संस्कृति, इतिहास व प्राचीन गौरव से जोड़ना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में जंगलों में एकान्त स्थान पर नगरों के कोलाहल से दूर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रों पर ज्ञानार्जन होता था जहाँ अन्य विद्याओं के साथ–साथ वेदों का ज्ञान दिया जाता था, चरित्र को सुधारा जाता था। बच्चों में चारित्रिक ज्ञान कूट–कूट कर भरा जाता था जीवन को संस्कारित करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता था और वहीं से निकले छात्र बड़े होकर ऋषि महर्षि राष्ट्रभक्त योद्धा, महापुरुष एवं विद्वान बनते थे। परिवार व राष्ट्र का नाम ऊँचा करते थे। उनका जीवन सत्य पथानुगामी होता था। परोपकार उनका धर्म होता था, वह सदा मानवता के लिए जीते थे, अधर्म से दूर रहते थे। भगवान राम, योगीराज श्रीकृष्ण, हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द तथा अन्य महापुरुष ऐसे हुए हैं जो अपनी महानता के कारण प्रसिद्ध हुए हैं। इसके विपरीत आज की शिक्षा में चरित्र का ज्ञान नहीं दिया जाता। वेदादि शास्त्रों के ज्ञान के अभाव में भ्रष्टाचारी, अनाचारी, दुराचारी व्यक्तियों का निर्माण हो रहा है जो राष्ट्र को निरन्तर अवनति के गर्त में धकेलते जा रहे हैं।

अब जब पूरी शिक्षा व्यवस्था ही दूषित है तो इन परिस्थतियों में हमारे शिक्षकों को अत्यधिक संयमित, चरित्रवान एवं प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है। चरमराई हुई तथा दूषित शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए न केवल शिक्षक बल्कि छात्रों एवं अभिभावकों को भी अपने चरित्र एवं सोच में बदलाव लाना होगा। शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहते हुए उत्तम कार्य करने की इच्छा जगानी होगी न केवल अपने विषय में बल्कि दूसरे विषयों का भी व्यवहारिक ज्ञान रखना होगा एवं नैतिक एवं चारित्रिक गुणों को ऊपर लाना होगा। शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए ईमानदारी से अत्यधिक परिश्रम करना होगा। क्योंकि एक सच्चा शिक्षक छात्रों में पुस्तकीय ज्ञान ही अवस्थित नहीं करता बल्कि उसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील रहता है। छात्रों को आत्मशून्य होने से बचाने के लिए शिक्षकों को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ आगे आना होगा। लेकिन शिक्षकों को कर्त्तव्य परायण बनाने के लिए छात्रों को भी संयमित होना पड़ेगा। सबसे पहले तो उन्हें शिक्षकों के प्रति श्रद्धा बढ़ानी होगी, छात्रों को शिक्षकों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। क्योंकि शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध जो दुनियाँ में सबसे श्रद्धेय और सम्माननीय सम्बन्ध है उसे पुनर्जीवित करने की अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि विद्यार्थियों का जीवन कहीं बनता है तो गुरुकुलों या विद्यालयों में। सुयोग्य, चरित्रवान शिक्षकों तथा आचार्यों के द्वारा ही विद्यार्थियों का जीवन निर्माण ही, राष्ट्र निर्माण है।

विद्यार्थियों का जीवन निर्माण करने के लिए समाज को संस्कारित करने के लिए आज हमें देश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को लागू करके गुरुकुलों को हर सम्भव सहयोग प्रदान करना होगा। देश में बने सभी आर्य समाज के भवनों तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों का लघु गुरुकुल खोलकर सदुपयोग करें। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को केन्द्र सरकार विधिवत रूप से मान्यता देकर पूरे देश में एक साथ लागू करे तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अगले दस वर्षों में हो सकता है। जिसमें विशेष रूप से आरक्षण, ऊँच–नीच, अस्पृश्यता तथा वैमनस्य को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। क्योंकि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आवासीय, निःशुल्क, समान एवं देश के सभी नागरिकों के लिए किसी जाति, मजहब का भेदभाव किये बिना सबको समान अवसर प्रदान करती है। यहाँ विशेष रूप से आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य समाज के भवनों में लघु गुरुकुल खोलकर इस अभियान को आगे बढ़ायें। यदि सभी आर्य समाजों में लघु गुरुकुल प्रारम्भ हो जाते हैं तो देश में हजारों गुरुकुल एक साथ खुलेंगे और उससे समाज के अन्य लोगों को भी विशेष प्रेरणा मिलेगी।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य वीरदल जोधपुर के पूर्व अध्यक्ष

आर्य अजीत सिंह जी का निधन

आर्य वीरदल जोधपुर के पूर्व अध्यक्ष अत्यन्त प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी आर्य अजीत सिंह जी का दिनांक 2 सितम्बर, 2020 को अचानक निधन हो गया है। श्री अजीत सिंह जी पिछले लम्बे समय से जोधपुर में आर्य समाज एवं आर्य वीरदल की गतिविधियों को संचालित करने में प्रमुख स्तम्भ के रूप में कार्य करते रहे। उनके नेतृत्व में अनेकों आर्य नवयुवकों ने आर्य वीरदल का प्रशिक्षण लेकर आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के कार्यक्रमों को गति देने का संकल्प लिया था। उनके निधन से केवल उनके परिवार की ही नहीं बल्कि समूचे आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति हुई है, तथा उनको जानने वाले आर्यजनों को गहरा आघात पहुँचा है। परन्तु परमात्मा के निर्णय को हम सब बदल पाने में असमर्थ हैं इसलिए न चाहते हुए भी ईश्वर के निर्णय को स्वीकार करना पड़ता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री अजीत सिंह जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि श्री अजीत सिंह जी हमारे सबसे विश्वस्त साथियों में से एक थे उनके जाने से हमें व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त कष्ट हुआ है। वे अत्यन्त जुझारू प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों एवं सहयोगियों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

भारी छूट पर उपलब्ध

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।